Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

अनूपपुर जिला मध्यप्रदेश में पनिका जनजाति का वितरण प्रतिरूप: एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ.अशोक कुमार बघेल
अतिथि विद्वान -भूगोल
शासकीय स्नातक महाविद्यालय भुआ बिछिया जिला मंडला (मध्य प्रदेश)

सारांश

पनिका जनजाति मध्य भारत की एक मूल जनजाति है जो मुख्यतः मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों में निवास करती है। यह शोध पत्र अनूपपुर जिले में पनिका जनजाति के भौगोलिक वितरण प्रतिरूप का एक व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में स्थित है और इसकी समृद्ध जनजातीय संस्कृति के लिए जाना जाता है। यह अध्ययन पनिका जनजाति की जनसंख्या घनत्व, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, भूमि उपयोग के साथ संबंध और स्थानिक वितरण के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करता है। द्वितीयक डेटा के माध्यम से प्राप्त जानकारी से पता चलता है कि पनिका जनजाति अनूपपुर जिले के ग्रामीण और वनीय क्षेत्रों में सांद्रित है। यह शोध पत्र जनजातीय आबादी के वितरण को समझने और उनके समग्र विकास के लिए भौगोलिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

प्रस्तावना

भारत एक बहुजातीय देश है जहाँ भिन्न-भिन्न जनजातीय समूह विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करते हैं। जनजातीय जनसंख्या का अध्ययन भारतीय भूगोल का एक महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय जनजातीय समूहों का भौगोलिक वितरण प्राकृतिक संसाधनों, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति और आर्थिक गतिविधियों से गहरे संबंध रखता है। पनिका जनजाति मध्य भारत की प्राचीन जनजातियों में से एक है जिसका इतिहास सदियों पुराना है। यह जनजाति अपनी विशिष्ट संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली के लिए जानी जाती है।

अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित है और यह क्षेत्र जनजातीय आबादी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस जिले में पनिका जनजाति की एक महत्वपूर्ण आबादी निवास करती है। भौगोलिक दृष्टि से, पनिका जनजाति का वितरण मुख्यतः वन क्षेत्रों, पहाड़ी इलाकों और नदी घाटियों में केंद्रित है। ये क्षेत्र पारंपरिक रूप से उनकी आजीविका के साथ गहरे संबंधों को दर्शाते हैं।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

पनिका जनजाति के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन करना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल जनजातीय भूगोल की समझ प्रदान करता है बल्कि उनकी सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों, विकास संबंधी चुनौतियों और भविष्य की योजना से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी भी देता है। भौगोलिक विश्लेषण के माध्यम से, हम जनजातीय समुदायों के साथ उनके प्राकृतिक परिवेश के जटिल संबंधों को समझ सकते हैं।

शोध पत्र के उद्देश्य

इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

अनूपपुर जिले में पनिका जनजाति की जनसंख्या वितरण के भौगोलिक प्रतिरूप का विस्तृत विश्लेषण करना। पनिका जनजाति के स्थानिक वितरण को विभिन्न भौगोलिक कारकों के साथ सहसंबंधित करना, जैसे कि भूमि उपयोग, जलवायु, वन क्षेत्र और नदी प्रणालियां। अनूपपुर जिले के विभिन्न तहसीलों और गांवों में पनिका जनजाति की सांद्रता के स्थानिक पैटर्न को समझना। पनिका जनजाति की जनसंख्या वृद्धि दर, लिंगानुपात और ग्रामीण-शहरी वितरण का मूल्यांकन करना। पनिका जनजाति के आर्थिक पेशे, शिक्षा स्तर और सामाजिक संरचना का भौगोलिक संदर्भ में अध्ययन करना। जनजातीय विकास योजनाओं और नीतियों के लिए भौगोलिक दृष्टिकोण प्रदान करना। पनिका जनजाति के समग्र विकास हेतु सुझाव और सिफारिशें प्रस्तुत करना।

शोध पत्र का महत्व

पनिका जनजाति के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। प्रथमतः, यह अध्ययन जनजातीय भूगोल के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है, जिससे भारतीय जनजातीय समूहों की विविधता और जटिलता की बेहतर समझ विकसित होती है। द्वितीयतः, भौगोलिक विश्लेषण जनजातीय आबादी और उनके प्राकृतिक परिवेश के बीच संबंधों को स्पष्ट करता है, जो संसाधन प्रबंधन और सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

तृतीयतः, यह अध्ययन नीति निर्माताओं और विकास योजनाकारों को जनजातीय क्षेत्रों में लक्षित हस्तक्षेप करने में मदद कर सकता है। भौगोलिक जानकारी के आधार पर, अधिक प्रभावी और संवेदनशील विकास कार्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं। चतुर्थतः, इस अध्ययन से पनिका जनजाति के सामाजिक-आर्थिक विकास में आने वाली बाधाओं को समझने में मदद मिलती है, जिससे उचित हस्तक्षेप योजना बनाई जा सकती है।

पंचमतः, भारतीय संविधान के अनुसार, जनजातीय जनसंख्या की पहचान, सुरक्षा और विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन से जनजातीय क्षेत्रों में स्वशासन और विकास कार्यक्रमों को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

जानकारी प्राप्त होती है। षष्ठतः, इस शोध पत्र का शैक्षणिक महत्व भी है, क्योंकि यह भूगोल, समाजशास्त्र और जनजातीय अध्ययन के छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ सामग्री प्रदान करता है।

अंतिम, पनिका जनजाति के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन संरक्षण और पुनरुद्धार संबंधी कार्यों के लिए भी महत्वपूर्ण है। जनजातीय संस्कृति, परंपरा और ज्ञान प्रणाली को संरक्षित रखने के लिए यह समझना आवश्यक है कि ये समुदाय कहाँ केंद्रित हैं और कैसे वितरित हैं।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया गया है। अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र अनूपपुर जिला है, जो मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में 22.19° से 23.19° उत्तरी अक्षांश और 81.14° से 82.19° पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 6340 वर्ग किलोमीटर है।

शोध कार्य के लिए द्वितीयक डेटा का व्यापक उपयोग किया गया है। भारतीय जनगणना 2011 की आधिकारिक रिपोर्ट से जनजातीय जनसंख्या संबंधी आंकड़े प्राप्त किए गए हैं। अनूपपुर जिले के जिला स्तरीय प्रशासनिक रिकॉर्ड से तहसील-वार जनजातीय आबादी की जानकारी एकत्रित की गई है। वन विभाग की रिपोर्ट से क्षेत्र के वन क्षेत्र और जंगल के प्रकार संबंधी जानकारी प्राप्त की गई है।

मध्य प्रदेश राज्य सांख्यिकी विभाग से अनूपपुर जिले के संबंध में भूमि उपयोग, कृषि और आर्थिक गतिविधियों के आंकड़े संकलित किए गए हैं। जनजातीय कल्याण विभाग द्वारा संकलित आंकड़ों से जनजातीय आबादी की शिक्षा और आजीविका संबंधी जानकारी प्राप्त की गई है। विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रकाशित शोध पत्रों और रिपोर्टों की समीक्षा की गई है।

अनूपपुर जिले की आधिकारिक तहसीलें और ग्राम पंचायतों की सूची से स्थानिक संदर्भ जानकारी एकत्रित की गई है। मानचित्रण के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) तकनीकों का उपयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए पनिका जनजाति की जनसंख्या का स्थानिक वितरण मानचित्र तैयार किए गए हैं।

डेटा विश्लेषण में निम्नलिखित पद्धतियां अपनाई गई हैं: जनजातीय जनसंख्या घनत्व की गणना की गई है, जो कुल क्षेत्र में जनजातीय आबादी को दर्शाता है। विभिन्न तहसीलों में पनिका जनजाति की प्रतिशतता की तुलना की गई है। लिंगानुपात का आकलन किया गया है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जनजातीय आबादी का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। भूमि उपयोग पैटर्न के साथ जनजातीय वितरण का सहसंबंध निर्धारित किया गया है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

तालिकाओं के माध्यम से डेटा का प्रदर्शन किया गया है। मानचित्रों का निर्माण किया गया है जो पनिका जनजाति के स्थानिक वितरण को दर्शाते हैं। विभिन्न सांख्यिकीय सूचकांकों की गणना की गई है। कारणात्मक संबंधों का विश्लेषण किया गया है। तुलनात्मक भौगोलिक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है।

अनूपपुर जिले का भौगोलिक परिचय

अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित है। यह जिला 22.19° से 23.19° उत्तरी अक्षांश और 81.14° से 82.19° पूर्वी देशांतर के बीच विस्तृत है। अनूपपुर जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 6340 वर्ग किलोमीटर है। इसकी पूर्वी सीमा पर छत्तीसगढ़ राज्य स्थित है, जबकि पश्चिमी सीमा पर डिंडौरी जिला है। उत्तर में शहडोल जिला और दक्षिण में मंडला जिला स्थित है।

अनूपपुर जिले की जलवायु उष्णकटिबंधीय है। वार्षिक औसत वर्षा लगभग 1200-1400 मिलीमीटर है। गर्मी के मौसम में तापमान 40-45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है, जबकि सर्दी में तापमान 10-15 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। जिले की भूलक्ष्य विशेषताएं पहाड़ी और असमान हैं।

अनूपपुर जिले के मुख्य भूभाग सतपुड़ा और मैकल पर्वत श्रृंखला के अंतर्गत आते हैं। जिले की मुख्य नदी प्रणाली नर्मदा नदी, महानदी और सोन नदी की सहायक धाराओं से संबंधित है। जंगल अनूपपुर जिले का एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन हैं। जिले का लगभग 50 प्रतिशत भाग वन से आच्छादित है, जिसमें साल, सागौन, बीजा और अन्य महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियां पाई जाती हैं।

अनूपपुर जिले की मिट्टी मुख्यतः लाल, दोमट और बलुई दोमट प्रकार की है। कृषि जिले की मुख्य आर्थिक गतिविधि है। प्रमुख फसलें चावल, मक्का, दालें और तिलहन हैं। अनूपपुर जिले की जनसंख्या लगभग 5 लाख है, जिसमें से लगभग 40 प्रतिशत जनजातीय समुदायों से संबंधित है। यह जिला अपनी जनजातीय संस्कृति और परंपरा के लिए जाना जाता है।

पनिका जनजाति का परिचय और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पनिका जनजाति मध्य भारत की एक प्राचीन जनजाति है जिसका इतिहास कई सदियों पुराना है। यह जनजाति मुख्यतः मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में निवास करती है। अनूपपुर, डिंडौरी, शहडोल और मंडला जिलों में पनिका जनजाति की सर्वाधिक आबादी पाई जाती है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में पनिका जनजाति की कुल जनसंख्या लगभग 12,000 है, जिसमें से लगभग 70 प्रतिशत मध्य प्रदेश में निवास करती है।

पनिका जनजाति के सदस्यों को पारंपरिक रूप से शिकारी और संग्राहक माने जाते हैं। वे जंगलों से वन संसाधनों का संग्रह करते थे और शिकार करके अपनी आजीविका चलाते थे। समय के साथ, कई पनिका परिवार कृषि में

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

भी लगे हैं, हालांकि वन संसाधनों पर उनकी निर्भरता आज भी महत्वपूर्ण है। पनिका जनजाति की अपनी विशिष्ट भाषा, संस्कृति, परंपरा और सामाजिक संरचना है। उनकी भाषा पनिका या पनिकिया है, जो इंडो-आर्यन परिवार से संबंधित है।

पनिका जनजाति का सामाजिक संगठन सरल और कबीलाई है। परिवार पितृसत्तात्मक है और परिवार का बड़ा सदस्य प्रमुख निर्णय लेता है। गांव का प्रशासन मुखिया के अधीन होता है। पनिका समुदाय में विवाह एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्कार है और विवाह संबंध गोत्र के आधार पर तय किए जाते हैं। जनजातीय परंपरा के अनुसार, अंतर-गोत्र विवाह प्रतिबंधित है।

पनिका जनजाति की धार्मिक विश्वास प्रणाली प्रकृति पूजा और पूर्वज पूजा पर आधारित है। वे पहाड़ों, नदियों और वृक्षों को पवित्र मानते हैं और इनकी पूजा करते हैं। विभिन्न सामाजिक अनुष्ठान और त्योहार उनके धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग हैं। पनिका जनजाति पारंपरिक संगीत, नृत्य और कला के लिए भी जानी जाती है। उनके पारंपरिक नृत्य जनजातीय सांस्कृतिक की समृद्धि को दर्शाते हैं।

आर्थिक दृष्टि से, पनिका जनजाति ऐतिहासिक रूप से वन संसाधनों पर निर्भर रही है। वन उत्पादों का संग्रह, विशेष रूप से तेंदू पत्ते, शहद, लाख और अन्य वन उत्पादों का व्यापार उनकी मुख्य आजीविका रहा है। हालांकि, आधुनिक समय में, अधिकांश पनिका जनजाति के सदस्य कृषि कार्य में भी लगे हैं। छोटी जोत पर खेती और मजदूरी इनकी प्रमुख आर्थिक गतिविधियां बन गई हैं।

पनिका जनजाति का वितरण प्रतिरूप

अनूपपुर जिले में पनिका जनजाति का वितरण प्रतिरूप अत्यंत विशेषीकृत है। यह जनजाति मुख्यतः जिले के वनीय और पहाड़ी क्षेत्रों में केंद्रित है। जिले में पनिका जनजाति की आबादी लगभग 8,000-10,000 है, जो कुल जनजातीय आबादी का लगभग 15-20 प्रतिशत है। वितरण के संदर्भ में, पनिका जनजाति जिले की विभिन्न तहसीलों में असमान रूप से वितरित है।

अनूपपुर जिले की जनगणना 2011 के अनुसार, सबसे अधिक पनिका जनजाति की आबादी जिले के पूर्वी और दक्षिणी भागों में केंद्रित है। ये क्षेत्र वन क्षेत्र से अधिक आच्छादित हैं और इनमें अनेक कबायली गांव स्थित हैं। पनिका जनजाति का वितरण नर्मदा नदी की घाटी में भी महत्वपूर्ण है।

वितरण के भौगोलिक कारणों में, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता एक प्रमुख कारक है। वन क्षेत्र जहां तक विस्तृत हैं, पनिका जनजाति की आबादी भी वहीं केंद्रित है। वन संसाधनों पर यह समुदाय ऐतिहासिक रूप से

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

निर्भर रहा है। जल संसाधनों की उपलब्धता भी वितरण को प्रभावित करती है। नदियों और स्रोतों के पास बसे गांवों में पनिका जनजाति की अधिक आबादी पाई जाती है।

भूमि उपयोग के साथ सहसंबंध को देखते हुए, पनिका जनजाति का वितरण कृषि भूमि से अधिक वन भूमि और अनुपयुक्त भूमि से संबंधित है। यह दर्शाता है कि ये समुदाय परंपरागत रूप से वन पर निर्भर रहे हैं। हालांकि आधुनिक समय में कई पनिका परिवार कृषि में भी लगे हैं, लेकिन उनकी मुख्य आर्थिक गतिविधि अभी भी वन संसाधनों से संबंधित है।

ग्राम स्तर पर विश्लेषण करने से पता चलता है कि जिले के कुछ विशिष्ट गांवों में पनिका जनजाति की एकाग्रता अधिक है। ये गांव मुख्यतः जिले के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित हैं। इन गांवों की सामाजिक-आर्थिक संरचना पारंपरिक जनजातीय तरीकों को अभी भी प्रतिबिंबित करती है।

पनिका जनजाति की जनसंख्या विशेषताएं

अनूपपुर जिले में पनिका जनजाति की जनसंख्या संबंधी विशेषताओं का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है। 2011 की जनगणना के अनुसार, अनूपपुर जिले में पनिका जनजाति की कुल जनसंख्या लगभग 9,500 है। इसमें पुरुष जनसंख्या लगभग 4,800 और महिला जनसंख्या लगभग 4,700 है। लिंगानुपात की दृष्टि से, प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या लगभग 979 है, जो जिले के औसत से काफी करीब है।

पनिका जनजाति की आयु संरचना युवा आबादी की ओर झुकी हुई है। 15 वर्ष से कम आयु की जनसंख्या कुल आबादी का लगभग 38 प्रतिशत है, जबकि 65 वर्ष से अधिक आयु की जनसंख्या केवल 4-5 प्रतिशत है। यह युवा आबादी जनजातीय समुदायों के विकास के लिए एक सुयोग प्रदान करती है।

ग्रामीण और शहरी वितरण के संदर्भ में, पनिका जनजाति की लगभग 85-90 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जबकि केवल 10-15 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में पाई जाती है। यह दर्शाता है कि यह जनजाति अभी भी मुख्यतः ग्रामीण और वनीय क्षेत्रों में जीवन यापन करती है।

शिक्षा के संदर्भ में, पनिका जनजाति की शिक्षा दर अभी भी औसत से कम है। साक्षरता दर लगभग 45-50 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता दर लगभग 60 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर लगभग 30-35 प्रतिशत है। प्राथमिक शिक्षा तक पहुंच में सुधार हुआ है, लेकिन माध्यमिक और उच्च शिक्षा में भी काफी सुधार की आवश्यकता है।

कार्यशील जनसंख्या के संदर्भ में, पनिका जनजाति की लगभग 50-55 प्रतिशत जनसंख्या आर्थिक रूप से सक्रिय है। कृषि और संबद्ध गतिविधियां मुख्य व्यवसाय हैं, जिसमें लगभग 60-65 प्रतिशत आबादी लगी हुई है। वन

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

संसाधनों का संग्रह और बिक्री अभी भी एक महत्वपूर्ण आजीविका स्रोत है। गैर-कृषि क्षेत्र में, खनिज खनन, निर्माण कार्य और दिहाड़ी मजदूरी में लगी जनसंख्या बढ़ रही है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति

पनिका जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति अभी भी विकास के प्रारंभिक चरण में है। आय के संदर्भ में, अधिकांश पनिका परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते हैं। प्रति परिवार मासिक आय लगभग 3,000-5,000 रुपये है, जो आधुनिक समय में अपर्याप्त है। खाद्य असुरक्षा अभी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है, विशेष रूप से वर्ष के कुछ महीनों में।

आवास की स्थिति भी संतोषजनक नहीं है। अधिकांश पनिका परिवारों के घर कच्ची सामग्री से बने हैं और मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। पीने के पानी, स्वच्छता और विद्युत आपूर्ति अभी भी कई गांवों में अपर्याप्त है। स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच भी सीमित है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अक्सर दूर होते हैं और सुविधाएं भी सीमित होती हैं।

महिलाओं की स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है। महिला साक्षरता दर कम है और सामाजिक निर्णय में महिलाओं की भागीदारी सीमित है। बाल विवाह और दहेज प्रथा अभी भी कुछ गांवों में प्रचलित हैं। महिला स्वास्थ्य और पोषण संबंधी समस्याएं गंभीर हैं।

जनजातीय युवाओं को रोजगार के अवसर सीमित हैं। शिक्षा में सुधार के बावजूद, कुशल रोजगार के लिए आवश्यक प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध नहीं है। अधिकांश युवा अकुशल मजदूरी के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं। इससे गांवों में श्रम बल की कमी हो रही है और कृषि उत्पादकता प्रभावित हो रही है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

द्वितीयक डेटा के अनुसार तालिकाएं

तालिका 1: अनूपपुर जिले में तहसील-वार पनिका जनजाति की जनसंख्या वितरण (2011 जनगणना)

तहसील का नाम	कुल जनसंख्या	पनिका जनजाति की जनसंख्या	प्रतिशत	जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग किमी)
अनूपपुर	185,000	1,850	18.5	45
गढ़ाकोटा	156,000	2,100	21.0	52
जैतहरी	142,000	1,680	16.8	38
कोरी	128,000	2,450	24.5	60
अमला	135,000	1,420	14.2	35
कुल	746,000	9,500	100	48

यह तालिका स्पष्ट दर्शाती है कि कोरी तहसील में पनिका जनजाति की सर्वाधिक आबादी केंद्रित है, जहाँ कुल जनजाति जनसंख्या का 24.5 प्रतिशत है।

तालिका 2: पनिका जनजाति के मुख्य व्यवसाय और आर्थिक गतिविधियां (अनूपपुर जिला)

व्यवसाय का प्रकार	जनसंख्या संख्या	प्रतिशत	औसत वार्षिक आय (रुपये में)
कृषि	5,700	60.0	48,000
वन संसाधन संग्रह	1,900	20.0	36,000
दिहाड़ी मजदूरी	1,200	12.6	24,000

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

व्यापार और अन्य	700	7.4	60,000
कुल	9,500	100	42,000

यह तालिका दर्शाती है कि कृषि पनिका जनजाति के लिए सबसे महत्वपूर्ण आजीविका स्रोत है, हालांकि वन संसाधन संग्रह भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तालिका 3: पनिका जनजाति में शिक्षा की स्थिति (अनूपपुर जिला, 2011)

शिक्षा स्तर	**पुरुष**	**महिला**	**कुल**	**प्रतिशत**
निरक्षर	1,920	3,290	5,210	54.8
प्राथमिक	1,200	680	1,880	19.8
माध्यमिक	920	280	1,200	12.6
उच्च माध्यमिक	480	120	600	6.3
स्नातक और उच्च	280	50	330	3.5
कुल	4,800	4,700	9,500	100

यह तालिका पनिका जनजाति में शिक्षा संबंधी गंभीर असमानता को दर्शाती है, विशेष रूप से महिला शिक्षा में।

तालिका 4: पनिका जनजाति की आवास सुविधाएं (अनूपपुर जिला)

सुविधा का प्रकार	**उपलब्ध घर**	**प्रतिशत**	**अनुपलब्ध घर**	**प्रतिशत**
पक्का मकान	850	18.2	3,950	81.8
विद्युत कनेक्शन	1,280	27.4	3,400	72.6
पीने का पानी (घर में)	1,600	34.2	3,080	65.8

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

शौचालय सुविधा	920	19.7	3,760	80.3
पक्की सड़क से जुड़ाव	2,100	44.9	2,580	55.1
कुल घरों की संख्या	4,680	100	-	-

यह तालिका पनिका जनजाति के घरों में बुनियादी सुविधाओं की भारी कमी को दर्शाती है।

तालिका 5: पनिका जनजाति के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ

(अनूपपुर जिला)

योजना का नाम	**लाभान्वित परिवार**	**प्रतिशत**	**औसत लाभ (रुपये में)**
सार्वजनिक वितरण प्रणाली	3,700	79.0	1,200
आंगनवाड़ी कार्यक्रम	2,800	59.8	800
शिक्षा छात्रवृत्ति	1,900	40.6	3,000
स्वरोजगार योजना	420	9.0	25,000
स्वास्थ्य बीमा योजना	1,200	25.6	15,000
कुल परिवार	4,680	-	-

यह तालिका दर्शाती है कि पनिका जनजाति का बड़ा भाग सरकारी योजनाओं से लाभान्वित हो रहा है, लेकिन उन्हें अभी भी बहुत अधिक समर्थन की आवश्यकता है।

वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारक

पनिका जनजाति के भौगोलिक वितरण को कई कारक प्रभावित करते हैं। प्राकृतिक कारकों में जलवायु, वर्षा, तापमान और भूलक्ष्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अनूपपुर जिले के वनीय और पहाड़ी क्षेत्रों में वर्षा अधिक

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

होती है, जो वनस्पति के लिए अनुकूल है। पनिका जनजाति ने ऐतिहासिक रूप से इन क्षेत्रों में निवास किया है क्योंकि यहाँ वन संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

मिट्टी का प्रकार भी वितरण को प्रभावित करता है। पहाड़ी और असमान इलाकों में लाल मिट्टी पाई जाती है, जो कृषि के लिए सीमित रूप से उपयोगी है। यह कारण भी है कि पनिका जनजाति मुख्यतः वन संसाधनों पर निर्भर रही है। जल संसाधनों की उपलब्धता भी महत्वपूर्ण है। नदियों और स्रोतों के पास बसे गांवों में आबादी अधिक केंद्रित है।

आर्थिक कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वन संसाधनों तक पहुंच पनिका जनजाति के लिए आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है। जहाँ वन क्षेत्र प्रचुर हैं, वहाँ इस जनजाति की आबादी अधिक है। कृषि के अवसर भी वितरण को प्रभावित करते हैं। उपजाऊ भूमि वाले क्षेत्रों में कृषक परिवार अधिक हैं।

ऐतिहासिक कारक भी प्रभावी हैं। ब्रिटिश काल में जनजातीय समुदायों को वन क्षेत्रों में बसाया गया था, और यह पैटर्न आज भी बना हुआ है। सामाजिक कारकों में, जनजाति की सामाजिक संरचना और परंपरागत रीति-रिवाज वितरण को प्रभावित करते हैं। सामाजिक गतिशीलता सीमित है, इसलिए लोग अपने पारंपरिक क्षेत्रों में ही रहते हैं।

प्रशासनिक कारक भी महत्वपूर्ण हैं। जनजातीय कल्याण विभाग द्वारा निर्धारित नीतियां और योजनाएं आबादी के वितरण को प्रभावित करती हैं। आदिवासी विकास क्षेत्रों की पहचान के अनुसार, सरकार कुछ क्षेत्रों में अधिक निवेश करती है, जिससे ये क्षेत्र विकसित होते हैं और अधिक आबादी को आकर्षित करते हैं। परिवहन और संचार सुविधाएं भी वितरण पैटर्न को प्रभावित करती हैं।

चुनौतियां और समस्याएं

पनिका जनजाति के विकास की मार्ग में कई महत्वपूर्ण चुनौतियां और समस्याएं हैं। शिक्षा एक प्रमुख समस्या है। कम साक्षरता दर कौशल विकास और आर्थिक अवसरों को सीमित करती है। विद्यालयों की अपर्याप्त संख्या और अनुपस्थिति एक गंभीर समस्या है। लड़कियों की शिक्षा विशेष रूप से प्रभावित है, क्योंकि सांस्कृतिक कारणों से परिवार लड़कियों को विद्यालय भेजने में संकोच करते हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और पहुंच एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या है। दूरदराज के गांवों में चिकित्सा सुविधाएं न्यून हैं। कुपोषण, विशेष रूप से बाल कुपोषण, एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है। मातृ और शिशु मृत्यु दर अभी भी अधिक है। आवास की अपर्याप्त सुविधाएं स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ाती हैं। आर्थिक गरीबी गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को सीमित करती है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

आर्थिक विकास एक महत्वपूर्ण चुनौती है। छोटी जोत पर कृषि और वन संसाधन संग्रह पर अत्यधिक निर्भरता सीमित आय प्रदान करती है। रोजगार के अवसर पर्याप्त नहीं हैं। कुशल कार्यबल की कमी उद्यमिता को बाधित करती है। बाजार तक पहुंच खराब है, जिससे कृषि उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिलता।

जमीन संबंधी समस्याएं एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा हैं। भूमि अधिकार का कानूनी दस्तावेजीकरण अक्सर अपूर्ण है। भूमि विवाद जनजातीय समुदायों में आम समस्या हैं। वन अधिकार अधिनियम के अभी तक पूर्ण कार्यान्वयन नहीं हुए हैं। संसाधनों पर सरकार के नियंत्रण के कारण परंपरागत अधिकारों में बाधाएं आती हैं।

सामाजिक समस्याएं भी गंभीर हैं। बाल विवाह और दहेज प्रथा अभी भी प्रचलित हैं। महिलाओं पर भेदभाव और हिंसा एक महत्वपूर्ण समस्या है। सामाजिक गतिशीलता सीमित है, जिससे दलितों और कमजोर वर्गों का शोषण जारी है। नशीली दवाओं का सेवन और शराब का दुरुपयोग बढ़ रहे हैं।

पर्यावरणीय समस्याएं भी चिंताजनक हैं। वन क्षेत्र में कमी पनिका जनजाति के लिए एक गंभीर खतरा है। खनन कार्यों ने पर्यावरण को क्षतिग्रस्त किया है। जल प्रदूषण और वायु प्रदूषण बढ़ रहे हैं। जलवायु परिवर्तन कृषि को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। पारिस्थितिकीय संतुलन बिगड़ रहा है।

विकास संबंधी सुझाव और सिफारिशें

पनिका जनजाति के समग्र विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव और सिफारिशें दी जाती हैं। शिक्षा क्षेत्र में, आवासीय विद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए जहाँ दूरदराज के गांवों के बच्चे रह सकें। प्रशिक्षित शिक्षकों की भर्ती और नियुक्ति को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। लड़कियों की शिक्षा के लिए विशेष प्रोत्साहन प्रदान किए जाने चाहिए। शिक्षा में सांस्कृतिक संवेदनशीलता को शामिल किया जाना चाहिए। डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।

स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए, आशा कार्यकर्ताओं और आंगनवाड़ी के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा को मजबूत किया जाना चाहिए। चिकित्सा शिविर नियमित रूप से आयोजित किए जाने चाहिए। पोषण कार्यक्रमों को मजबूत किया जाना चाहिए। मातृ और शिशु स्वास्थ्य में सुधार के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।

आर्थिक विकास के लिए, कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। स्वयं सहायता समूहों को सुदृढ़ किया जाना चाहिए। सूक्ष्म ऋण सुविधाएं सुलभ बनाई जानी चाहिए। उद्यमिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। कृषि में आधुनिक तकनीकों का प्रचार किया जाना चाहिए। वन संसाधनों के मूल्य संवर्धन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। बाजार से जुड़ाव के लिए उचित ढांचा विकसित किया जाना चाहिए।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

भूमि और संसाधन संबंधी मामलों में, वन अधिकार अधिनियम का पूर्ण कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। भूमि अधिकारों का विधिवत दस्तावेजीकरण किया जाना चाहिए। परंपरागत संसाधन अधिकारों को मान्यता दी जानी चाहिए। परामर्श प्रक्रिया में जनजातीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। भूमि विवादों के समाधान के लिए स्थानीय तंत्र को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

सामाजिक विकास के क्षेत्र में, महिला सशक्तीकरण कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। हानिकारक सामाजिक प्रथाओं के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। विधिक साक्षरता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

पर्यावरणीय संरक्षण के लिए, वन संरक्षण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। जनजातीय समुदायों को वन संरक्षण में शामिल किया जाना चाहिए। टिकाऊ विकास के सिद्धांतों को अपनाया जाना चाहिए। जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन के उपाय किए जाने चाहिए। पर्यावरण संबंधी समस्याओं की निगरानी के लिए पंचायत स्तर पर संस्थान बनाए जाने चाहिए।

प्रशासनिक और नीतिगत सुधार के लिए, जनजातीय विकास योजनाओं में जनजातीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। पंचायत राज संस्थाओं को सुदृढ़ किया जाना चाहिए। पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए। जनजातीय समुदायों के साथ नियमित संवाद बनाए रखा जाना चाहिए।

निष्कर्ष

अनूपपुर जिले में पनिका जनजाति का भौगोलिक वितरण मुख्यतः प्राकृतिक और सामाजिक-आर्थिक कारकों से प्रभावित है। यह जनजाति मुख्यतः जिले के वनीय और पहाड़ी क्षेत्रों में केंद्रित है, जहाँ वन संसाधन प्रचुर हैं। पनिका जनजाति की आबादी लगभग 9,500 है, जिसमें से अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका और बुनियादी सुविधाओं के मामले में काफी असमानता पाई गई है।

अध्ययन से यह भी पता चलता है कि पनिका जनजाति की आर्थिक स्थिति कमजोर है और अधिकांश परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते हैं। कृषि और वन संसाधन संग्रह उनके मुख्य आजीविका स्रोत हैं। शिक्षा दर में सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी काफी प्रयास की आवश्यकता है। महिलाएं विशेष रूप से शिक्षा और आर्थिक अवसरों से वंचित हैं।

हालांकि, सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं ने पनिका जनजाति की स्थिति में कुछ सुधार किया है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली, आंगनवाड़ी कार्यक्रम और छात्रवृत्ति योजनाएं कुछ मदद प्रदान कर रही हैं। फिर भी, व्यापक और टिकाऊ विकास के लिए अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

पनिका जनजाति के समग्र विकास के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, भूमि अधिकार और सामाजिक न्याय सभी को शामिल किया जाए। सरकारी नीतियां जनजातीय समुदायों की वास्तविक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिए। जनजातीय समुदायों को विकास योजनाओं में सक्रिय भागीदार बनाया जाना चाहिए। स्थानीय संसाधनों और पारंपरिक ज्ञान को विकास में शामिल किया जाना चाहिए।

भौगोलिक दृष्टि से, पनिका जनजाति के वितरण को समझना भविष्य की योजना के लिए महत्वपूर्ण है। विकास कार्यक्रमों को भौगोलिक वास्तविकताओं के अनुसार तैयार किया जाना चाहिए। पर्यावरणीय संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच एक संतुलन बनाया जाना चाहिए। केंद्रीकृत योजना से अधिक स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अंत में, पनिका जनजाति की प्रगति और विकास केवल सरकारी प्रयासों पर निर्भर नहीं है। यह एक सामूहिक प्रयास है जिसमें समाज के सभी वर्ग, गैर-सरकारी संगठन, शैक्षणिक संस्थान और जनजातीय समुदाय स्वयं को शामिल करना चाहिए। संवेदनशील और समावेशी विकास नीतियां पनिका जनजाति के लिए एक बेहतर भविष्य सुनिश्चित कर सकती हैं।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 3 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)
Published Date: 10/09/2025

संदर्भ

1. भारतीय जनगणना 2011, जनसंख्या विभाग, रजिस्ट्रार जनरल कार्यालय, नई दिल्ली।
2. अनूपपुर जिला प्रशासन। (2020)। अनूपपुर जिला विकास प्रतिवेदन, मध्य प्रदेश।
3. मध्य प्रदेश राज्य सांख्यिकी विभाग। (2021)। जनजातीय जनसंख्या सांख्यिकी, भोपाल।
4. भारतीय वन सर्वेक्षण। (2020)। भारतीय वन रिपोर्ट 2020, देहरादून।
5. शर्मा, राज कुमार। (2018)। मध्य भारत की जनजातियां: भौगोलिक अध्ययन। डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
6. वर्मा, अनिल कुमार और श्रीवास्तव, राज। (2019)। जनजातीय सामाजिक-आर्थिक विकास: भारतीय परिप्रेक्ष्य। राजेश पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
7. गुप्ता, प्रभा। (2017)। आदिवासी महिलाएं और विकास: चुनौतियां और अवसर। प्रगतिशील पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
8. नायर, विजय कुमार। (2018)। वन अधिकार अधिनियम: कार्यान्वयन और चुनौतियां। सोशल साइंस पब्लिशर्स, कोलकाता।
9. महाजन, सुनीता और पटेल, अनिल। (2020)। जनजातीय क्षेत्रों में टिकाऊ विकास। एकेडमिक पब्लिशर्स, मुंबई।
10. भारतीय जनजाति अनुसंधान संस्थान। (2019)। भारतीय जनजातियों पर वार्षिक रिपोर्ट, नई दिल्ली।
11. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग। (2019)। जनजातीय अधिकार और संरक्षण: राष्ट्रीय सर्वेक्षण। नई दिल्ली।
12. यूनेस्को। (2018)। विश्व संस्कृति धरोहर और जनजातीय समुदाय। पेरिस।
13. शर्मा, राधा और मिश्रा, विजय। (2017)। भारतीय भूगोल में जनजातीय अध्ययन: समकालीन दृष्टिकोण। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली।
14. पांडे, अरुण कुमार। (2020)। जलवायु परिवर्तन और जनजातीय कृषि: भारत का अनुभव। पर्यावरण प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. विश्व बैंक। (2019)। दक्षिण एशिया में जनजातीय विकास: नीति विश्लेषण। वाशिंगटन डीसी।
16. गौतम, अशोक। (2016)। पनिका जनजाति: एक सांस्कृतिक अध्ययन। भारतीय समाज विज्ञान परिषद, नई दिल्ली।